अेक कड़ुआ ख़त

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक ३८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १९ अक्तूबर, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८: शि० १४; डॉलर ३

अेक विद्यार्थीकी अुलझन

अेक विद्यार्थीने अपने शिक्षकको अेक ख़त लिखा था। अुसका नीचेका हिस्सा शिक्षकने मेरी राय जाननेके लिअे मेरे पास भेजा है। विद्यार्थीका ख़त अंग्रेजीमें है। अुसकी मातृभाषा क्या होगी, यह मैं नहीं जानता :

"मुझे दो बातोंने घेर लिया है : अेक तरफ़से मेरे देश-प्रेमने और दूसरी तरफ़से तेज विषय-वासनाने। अिससे मुझमें विरोधी भावनायें पैदा होती हैं और मेरे निर्णय हिल जाते हैं। मुझे अपने देशका पहले नम्बरका सेवक बनना है। लेकिन साथ ही मुझे दुनियाका मजा भी लेना है। मुझे यह कबूल करना चाहिये कि अीश्वरमें मेरी श्रद्धा नहीं है, हालाँकि कितनी ही बार मुझे अीश्वरका डर मालूम होता है। सच पूछा जाय, तो सारा जीवन ही अेक समस्या है। मैं क्या जानूँ कि अिस जीवनके बाद मेरा क्या होनेवाला है? मैंने बहुतसी जलती चितायें देखी हैं — आखिरी चिता मैंने अपनी मान ली है। जलती चिताके दृश्यने मुझपर भयंकर असर पैदा किया। क्या मेरे भी अैसे ही हाल होंगे? यह विचार भी मैं सहन नहीं कर सकता। किसी घायलको देखता हूँ, तो मेरे सिरमें चक्कर आने लगता है। बादमें मेरी कल्पना काम करने लगती है और कहती है कि तेरे शरीरके भी किसी दिन यही हाल होंगे! मैं जानता हूँ कि किसी शरीरको अिस हालतमेंसे मुक्ति नहीं मिलती। साथ ही, अैसा लगता है कि मौतके बाद जीवन नहीं है, और अिसलिअे मुझे मौतका डर लगता है।

"अिस हालतमें मेरे पास सिर्फ़ दो ही रास्ते हैं — या तो मैं अिस अुलझनमें फँसकर जलता रहूँ या दुनियाके अैशआराममें लिपटकर दूसरी बातोंका खयाल तक न करूँ। दूसरे किसीके सामने मैंने यह बात कबूल नहीं की, लेकिन आपके सामने कबूल करता हूँ कि मैंने तो दुनियाका मजा लूटनेका रास्ता ही पकड़ा है।

"यह दुनिया ही सच्ची है और किसी भी कीमतपर अुसके मजे लूटने ही हैं। मेरी पत्नी अभी-अभी मरी है। मेरे मनमें अुसके लिअे प्रेम था। लेकिन मैं देखता हूँ कि अुस प्रेमकी जड़में अुसका मरना नहीं था, बल्कि मेरा यह स्वार्थ था कि अुसके मरनेसे मैं अकेला रह गया। मरनेके बाद तो कोअी गुत्थी सुलझानेको रहती नहीं; और जिन्दे आदमीके लिअे तो सारी जिन्दगी ही अेक गुत्थी है। शुद्ध प्रेममें मेरी श्रद्धा नहीं है। जिसे प्रेमके नामसे पहचाना जाता है, वह प्रेम तो सिर्फ़ विषय-भोगका होता है। अगर शुद्ध प्रेम जैसी कोअी चीज होती, तो अपनी पत्नीके बनिस्बत अपने माँ-बापमें मेरा आकर्षण ज़्यादा होना चाहिये था। लेकिन हालत तो अिससे बिलकुल अुलटी थी; माँ-बापके बनिस्बत पत्नीमें मेरा आकर्षण ज़्यादा था। यह सच है कि मैं अपनी पत्नीकी तरफ़ वफ़ादार था। लेकिन अुसे मैं यह गारण्टी नहीं दिला सकता था कि अुसके मरनेके बाद भी अुसके तरफ़ मेरा प्रेम बना रहेगा। अुसके मरनेके बाद मुझे जो दुःख होगा, वह तो अुसके न रहनेसे पैदा होनेवाली मुसीबतोंका दुःख होगा। आप अिसे अेक तरहकी बेरहमी कह सकते हैं। सो जैसा भी हो, लेकिन सच्ची हालत यही है। अब मेहरबानी करके मुझे लिखिये और रास्ता बताअिये।"

खतके अिस हिस्सेमें तीन बातें आती हैं। अेक, विषय-वासना और देश-प्रेमके बीच खड़ा होनेवाला विरोध; दूसरी, अीश्वरमें और मरनेके बादके भविष्यमें अश्रद्धा; और तीसरी, शुद्ध प्रेम और विषय-वासनाका द्वन्द्व युद्ध।

पहली अुलझन ठीक ढंगसे रखी मालूम होती है। अुसका सार यह है कि विषय-भोगकी अिच्छा सच्ची बात है और देश-प्रेम बहते प्रवाहमें खिंच जानेके समान है। यहाँ देश-प्रेमका अर्थ होगा सत्ता पानेके प्रपंचमें पड़ना, ताकि अुसके साथ विषय-वासना पूरी करनेका मेल बैठ सके। अिस तरहके बहुतसे अुदाहरण मिल सकते हैं। देश-प्रेमका मेरा अर्थ यह है कि प्रजाके गरीब लोगोंके लिअे भी हमारे दिलमें प्रेमकी आग जलती हो। यह आग विषय-वासना जैसी चीज़को हमेशा जला डालती है। अिसलिअे मैं देश-प्रेम और विषय-वासनाके बीचमें कोअी झगड़ा देखता ही नहीं। अुलटे, यह प्रेम हमेशा विषय-वासनाको जीत लेता है। अैसे विश्व-प्रेमको जो वृत्ति तोड़ सके, अुसे पोसनेका समय भी कहाँ बच सकता है? अिसके खिलाफ़ जिस आदमीको विषय-वासनाने अपने वशमें कर लिया है, अुसका तो नाश ही होता है।

अीश्वरके बारेमें और मरनेके बादके भविष्यके बारेमें अश्रद्धा भी अूपरकी वासनामेंसे ही पैदा होती है, क्योंकि यह वासना औरत और मर्दको जड़से हिला देती है। अनिश्चय अुन्हें खा जाता है। विषय-वासनाके नाश हो जानेपर ही अीश्वर पर रहनेवाली श्रद्धा जीती है। दोनों चीजें साथ साथ नहीं रह सकतीं।

तीसरी अुलझनमें पहलीको ही दुहराया गया मालूम होता है। पति और पत्नीके बीच शुद्ध प्रेम हो, तो वह दूसरे सब प्रेमोंके बनिस्बत आदमीको अीश्वरके ज़्यादा पास ले जाता है। लेकिन जब पति-पत्नीके बीचके प्रेममें विषय-वासना मिल जाती है, तब वह मनुष्यको अपने भगवानसे दूर ले जाती है। अिसमेंसे अेक सवाल पैदा होता है : अगर औरत और मर्दका भेद पैदा न हो, विषय-भोगकी अिच्छा मर जाय, तो शादीकी ज़रूरत ही क्या रह जाय?

अपने खतमें विद्यार्थीने ठीक ही कबूल किया है कि अपनी पत्नीकी तरफ़ अुसका स्वार्थ-भरा प्रेम था। जो वह प्रेम निःस्वार्थ होता, तो अपनी जीवन-संगिनीके मरनेके बाद विद्यार्थीका जीवन ज़्यादा अूँचा अुठता। क्योंकि साथीके मरनेके बाद अुसकी यादमेंसे, पिछड़े हुअे लोगोंकी सेवामें अुसे भाअीकी लगन ज़्यादा बढ़ी होती।

नअी दिल्ली, १२–१०–'४७
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

आज़ाद हिन्दुस्तानमें नअी तालीम

सारा राष्ट्र १५ अगस्तकी तरफ़ बड़ी बड़ी आशाओं और रोमांचकारी अुत्साहसे देख रहा था, क्योंकि अुस दिन अुसे लम्बी लड़ाअीके बाद आज़ादी और स्वराज मिलनेवाला था। अुस दिन सारे देशमें जोरदार आँधीकी तरह आम खुशीकी जो लहर फैली, अुससे नेताओंको भी अचरज हुआ। विदेशी हुकूमतसे छुटकारा पानेके कारण लोगोंमें जो फुर्ती और अुत्साह फूट पड़ा है और राष्ट्रका भविष्य बनानेकी जो ताक़त अुनमें है, अुन सबका अुपयोग जल्दी ही राष्ट्रकी अमर आत्माके बढ़प्पन और गौरवको नया जन्म देनेके रचनात्मक कामोंमें किया जाना चाहिये। खुशकिस्मतीसे गांधीजीने रचनात्मक प्रोग्रामके द्वारा देशको रास्ता बताया है और अलग अलग संस्थाओंने अिस रचनात्मक प्रोग्रामपर कम-ज़्यादा सफलतासे अमल भी किया है।

राष्ट्र-निर्माणके काममें शिक्षाको — खासकर ६ से १४ बरसके स्कूल जाने लायक लड़के-लड़कियोंकी मुफ्त शिक्षाको — पहला स्थान मिलना चाहिये। आज़ादी, सेवा और क़ुरबानीकी भावना दिलमें बैठा सकनेवाली शिक्षण-संस्थायें कायम करनेकी हमारे देशमें तारीफके लायक कोशिशें की गअी हैं। लेकिन ये सारी कोशिशें करनेपर भी अैसे स्वतंत्र विचारवाले लोग बहुत थोड़े मिले, जो हिन्दुस्तानके लाखों गाँवोंके करोड़ों दुःखी और गरीब लोगोंकी सेवामें अपना जीवन लगा दें। अिस दर्दनाक हालतका खास कारण हमारे राष्ट्रकी सियासी गुलामी थी।

शिक्षा सचमुच अेक समाज़ी काम है। जो समाज अपना सियासी, समाजी और माली ढाँचा बनाने और अुसका विकास करनेके लिअे आज़ाद है, वही आज़ादी, सेवा और त्यागकी अूँची भावनाओंवाली ठोस शिक्षा अपने बच्चोंको दे सकता है।

आज हम अैसे ही नये युगके दरवाजेपर खड़े हैं। हम बेशक यह आशा कर सकते हैं कि नया जीवन और नअी प्रेरणा राष्ट्रकी शिक्षाको सजीव बनायेंगे और अच्छे कार्यकर्ता अिस ज़रूरी और कठिन काममें अपना जीवन लगायेंगे।

दस बरस पहले गांधीजीने अपनी दूरंदेशीसे आजाद राष्ट्रकी माँगोंको पूरा करनेवाला तालीमी प्रोग्राम देशके सामने रखा था। मिसालके तौरपर हम तालीमकी अिस नअी योजनाके अेक हिस्से 'नअी तालीम'को ही लें। गांधीजीकी रायके मुताबिक 'नअी तालीम' व्यक्ति और समाजकी सफ़ाअीसे शुरू होती है।

हमें सेवाग्रामके, जहाँ नअी तालीम ८ बरस पहले शुरू की गअी थी, आसपासके गावोंसे ये समाचार मिले हैं कि वहाँके सारे लोगोंने गाँवोंकी सफाअी और बरसोंसे जमे हुअे कूड़े-करकटको हटानेके लिअे बिना किसीके कहे अपना संगठन बना लिया है। अैसे कामको पहले शानके खिलाफ़ समझा जाता था। लोग यह मानते थे कि सफाअीका काम विधाताने भंगियों और मेहतरों जैसे अछूतोंके ही जिम्मे कर दिया है। लेकिन आजादी मिलनेके साथ ही लोगोंमें आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वासकी जो भावना आअी, अुससे अेक ही दिनमें वे सफाअी सम्बन्धी और समाजी जिम्मेदारीको समझ गये। सच्ची आजादीके साथ साथ अुसके फर्ज और जिम्मेदारियोंके आनेसे देशकी आम जनतामें जो ताकत और जोश पैदा हुआ है, अुसे सारे राष्ट्रमें नअी तालीमका प्रचार करनेके काममें लगाना चाहिये। हमें आशा है कि सूबा-सरकारें नअी तालीमको सारे देशमें फैलानेका काम हाथमें लेंगी। आज सिर्फ़ नअी तालीम ही देशकी बड़ी-बड़ी ज़रूरतोंको पूरा कर सकती है और जनताको आजके हलके और अिन्सानकी शानके खिलाफ़ जीवन-स्तरसे अूपर अुठा सकती है।

सेवाग्राम, १७-९-'४७ (अंग्रेजीसे).

अी. डब्लू. आर्यनायकम,
मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

वाह छावनीमें कस्तूरबा ट्रस्टकी बहनोंका काम

रावलपिण्डीके पास वाह छावनीमें मैं चार हफ्ते रही। अुस बीच मुझे कस्तूरबा ट्रस्टकी विद्यार्थिनोंके साथ रहनेका मौका मिला। वे लगभग शुरूसे ही छावनीमें काम कर रही थीं। शहादराकी श्रीमती विद्यावतीबहन, जिन्हें जवान और बूढे प्यारसे 'दीदी' कहते थे, शहादरामें ग्राम-सेविकाओंका अेक शिक्षण-शिविर चला रही थीं। पिछले मार्चकी भयंकर बरबादीके बाद ही श्रीमती रामेश्वरी नेहरूके साथ अुन्होंने वाह छावनी और रावलपिण्डीके दंगेसे बरबाद हुअे हिस्सोंका मुआअिना किया था। वहाँ अुन्होंने जो दर्दनाक दृश्य देखे और दिलको कँपा देनेवाली जो कहानियाँ सुनीं, अुनसे अुनके दिलको गहरी चोट लगी। अुन्होंने यह महसूस किया कि अेक पंजाबी और समाज-सेविका होनेके नाते रावलपिण्डीके दुःखी लोगोंकी सेवा करना अुनका सबसे पहला फ़र्ज़ है। गजबकी तेजी और लगनसे अुन्होंने रास्तेकी रुकावटें दूर कर दीं और वाह छावनीमें आकर निराश्रितोंकी सेवा करनेकी अिजाजत ले ली। अुनके साथ काम करनेवाली ६ बहनोंकी अेक टुकड़ी थी, जिनमेंसे ५ कस्तूरबा शिक्षण-शिविरकी विद्यार्थिनें थीं और छठी बहन सियालकोटकी श्रीमती कृष्णा पंजा अुनकी शिक्षिका थीं। वे सब छावनीमें बड़ी कीमती सेवा कर रही थीं और सबकी प्रिय बन गअी थीं। वाह छावनीके अस्पतालके वार्डमें रोजाना लगभग १५० बीमारोंका औसत रहता था। लेकिन नर्सोंका अच्छा अिन्तज़ाम नहीं था। लम्बे समयसे लोगोंको पूरी और गिज़ा पहुँचानेवाली खुराक न मिलनेसे बहुतसे निराश्रित बीमार रहने लगे थे। कस्तूरबा ट्रस्टकी अिन बहनोंने नर्सका काम करके और खास-खास बीमारोंको अीमानदारी और ग़ैरतरफ़दारीसे फल और दूध बाँटकर अस्पतालके कर्मचारियोंको कीमती मदद पहुँचाअी। अस्पतालके बाहर वे दिनभर निराश्रितोंमें न्यायसे राहतकी चीजें बाँटनेका काम किया करतीं। बँटवारेका काम अुस समय बड़ा मुश्किल हो जाता है, जब सबको सन्तोष दिलाने लायक काफ़ी सामान नहीं होता। अैसे समय काफ़ी सोच-विचार, विवेक, होशियारी और धीरजकी ज़रूरत होती है। अपनी कमजोर हालतके बावजूद दीदी रोजाना सुबह ५ बजेसे लेकर रातके ११ बजे तक या अिससे भी ज़्यादा काममें लगी रहतीं।

दीदीने छावनीमें अेक कताअी-क्लास और लड़कियोंके दो स्कूल भी चालू किये। अुन्होंने अपनी शिक्षिकायें निराश्रितोंमेंसे चुनीं और अुन्हींमेंसे अेक टुकड़ी अस्पतालके काममें मदद करनेके लिअे भी चुनी और तैयार की। अुन्होंने अस्पतालमें रहनेवाले बच्चोंके कपड़े सीने और वहाँकी बहुत ज़्यादा मैली गादियोंको धुलाने और फिरसे भरानेका भी अिन्तजाम किया। श्रीमती कृष्णा पंजाकी जिम्मेदारी ज़्यादातर राहतका सामान बाँटनेकी ही थी। अस्पतालके अेक डॉक्टर हमेशा अुन्हें चिढ़ाया करते कि आप सुबहसे रात तक निराश्रितोंमें तेल, साबुन, जूते और कपड़े बाँटकर अपनी शिक्षा और अपने टेकनिकल ज्ञानको बेकार बना रही हैं। वे डॉक्टरकी बात सुनकर हँस देतीं और बेहद धीरजके साथ अपने काममें जुट जातीं।

अिन सारी सेवाओंके अलावा, कस्तूरबा ट्रस्टकी बहनोंने निराश्रितोंके सामने सादगी, मेहनत और समाजी जीवनकी मिसाल पेश की। अुनकी सेवा अच्छे से अच्छे ढंगकी निस्स्वार्थ सेवा थी। अगर ट्रस्टको श्रीमती विद्यावती बहन जैसी संगठन करनेवाली कुछ और बहनें मिल सकें, तो अुसका काम कस्तूरबाकी आत्माको ज़रूर सन्तोष देगा।

नअी दिल्ली, २०-९-'४७ (अंग्रेजीसे)

सुशीला नय्यर

www.vinoba.in

"अेक पाअी भी नहीं"

३० जुलाअी, १९४७को लन्दनकी सेवॉय होटलमें 'पौंड-पावने'पर अेक जलपान-चर्चा (लंचन सिम्पोसियम) का प्रबन्ध किया गया था, जिसमें केम्ब्रिजके प्रोफेसर हैरॉड, 'अीस्टर्न अिकॉनॉमिस्ट'के डॉक्टर लोकनाथन् और डॉक्टर डी० डी० अेस० कोलने हिस्सा लिया था।

प्रोफेसर हैरॉडने अिंग्लैंडकी माली हालतका दयनीय चित्र खींचते हुअे कहा कि आज यह देश भयंकर मुसीबतमें पड़ा हुआ है और अुसकी माली हालतमें जल्दी-से-जल्दी सुधार करनेकी बहुत बड़ी ज़रूरत है। अैसी हालतमें मेरा अनुमान है कि अिंग्लैंडका अेक रास्ते चलता आदमी भी निश्चित रूपसे कह सकता है कि ब्रिटेन "अेक पाअी भी नहीं" चुका सकता।

प्रोफेसर हैरॉडने अपनी पूरी चर्चामें ये ही बातें घुमा-फिराकर कहीं।

डॉ० लोकनाथन्ने अपनी चर्चामें अुसी दृष्टिकोणको अपनाया, जो हिन्दुस्तानमें अिस विषयपर अक्सर अपनाया जाता है। अुन्होंने कहा कि हिन्दुस्तानका यह कर्ज़ सिर्फ़ हिसाबी कर्ज़ नहीं है। अुसने हल्की कीमतोंपर अिंग्लैंडको अपना माल दिया है, अिसलिअे अुसे नामंजूर नहीं किया जा सकता। अिस कर्ज़को नामंजूर करनेके लिअे अिंग्लैंडको अपनी मौजूदा गिरी हुअी माली हालतका बहाना नहीं लेना चाहिये।

प्रो० कोलने अिस विषयको ऊँचे नैतिक दृष्टिकोणसे देखते हुअे प्रो० हैरॉडकी दलीलोंका थोथापन साबित किया और कहा कि आज अगर अिंग्लैंडके किसी रास्ते चलते आदमीसे पौंड-पावनेके बारेमें सवाल करें, तो वह अुलटे आपसे पूछेगा कि यह पौंड-पावना क्या चीज़ है? वह अिस कर्ज़के बारेमें कुछ नहीं जानता और न अिसे चुकानेकी कोअी परवाह करता। प्रो० कोलने अिस सचाअीको भी सामने रखा कि पिछले युद्धमें हिन्दुस्तान अेक आज़ाद देश नहीं था, अिसलिअे अिंग्लैंडने जो कुछ अुससे लिया, वह हिन्दुस्तानकी सम्मतिसे नहीं, बल्कि अुसकी सियासी गुलामीसे फायदा अुठाकर लिया। अिसलिअे अिस कर्ज़को चुकाते वक़्त अपनी सहूलियतोंका रोना रोना और यह कहना कि अुसे चुकानेकी हममें ताक़त नहीं है, ग़ैर-अिन्साफ़ी है। यहाँ भी मैं प्रो० हैरॉडसे पूछना चाहता हूँ कि अिंग्लैंडमें यह कर्ज़ चुकानेकी ताक़त कैसे नहीं है? मैं मानता हूँ कि अिंग्लैंडके सामने भी कठिनाअियाँ हैं, मगर यूरोपके देशोंमें अिंग्लैंडकी माली हालत सबसे अच्छी है और हिन्दुस्तानकी हालतसे अुसकी तुलना करनेपर तो मैं निश्चित रूपसे यह मानता हूँ कि अुसे अपने कर्ज़की अेक-अेक पाअी चुका देनी चाहिये।

अूपर दिये हुअे बयानोंसे पता चलेगा कि पौंड-पावनेके सवालके पीछे अिंग्लैंडकी कौन-कौनसी शक्तियाँ अपना काम कर रही हैं। हमारी बदक़िस्मतीसे प्रो० कोल जैसे विचार रखनेवाले आदमी बहुत थोड़े हैं और देशकी कौंसिलोंमें अुनका ज्यादा असर नहीं है। हमको अंग्रेज जनताके चरित्रपर अितना विश्वास है कि परिस्थितियोंके ग़लत बयानका डर रखे बग़ैर अगर अिंग्लैंडके राह चलते आदमीको वे सारी हालतें बता दी जायँ, जिनमें हिन्दुस्तानसे माल लिया गया था और यह कहा जाय कि यह कर्ज़ अदा करना अिंग्लैंडका फ़र्ज़ है, तो कोअी भी विश्वासके साथ कह सकता है कि वह राह चलता आदमी बिना किसी पक्षपातके कहेगा—'अगर हमने अिन चीज़ोंको अपने काममें लिया है, तो हमें अीमानदारीसे अुनकी कीमत चुकानी चाहिये; फिर अिससे हमें चाहे जैसी मुसीबतका सामना क्यों न करना पड़े!' ब्रिटिश सरकारके माली हित, ग्रेट-ब्रिटेनकी मामूली जनताके माली हितोंसे बिलकुल भिन्न हैं। वहाँके मामूली नागरिकमें अभी भी कुछ नैतिक भावना और अपनी अिज़्ज़तका ख़याल बाकी है, जो अैसे सवालोंपर निर्णय देनेमें अपना असर डालता है।

पौंड-पावनेके निपटारेका सवाल अभी भी खटाअीमें पड़ा है, अगरचे चालू सालके आखिर तक हिन्दुस्तानका खर्च चलानेके लिअे अेक आरज़ी समझौता कर लिया गया है। अिसलिअे, हमें अुम्मीद है कि जब आखिरी समझौता होगा, तब अिंग्लैंड-द्वारा किये जानेवाले "अेक पाअी भी नहीं" के अिस ज़बर्दस्त प्रचारके रुखको भारत-सरकार अपने ध्यानमें रखेगी और दृढ़ताके साथ हिन्दुस्तानके दावोंको पेश करेगी।

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कुमारप्पा

पंजाबियोंके लिअे अच्छा मौका

पंजाबमें अत्याचार सहन करके, या अुसके डरसे, जो लोग हिन्दुस्तानके अलग-अलग प्रान्तोंमें आकर बसे हैं, अुनकी आँखोंमें गुस्सा, ज़बानपर चिढ़ और कड़ुआपन, और दिलमें अश्रद्धाका होना स्वाभाविक है। लेकिन गुस्से, चिढ़ और अश्रद्धासे किसीको लाभ नहीं हुआ है, न समाजको फ़ायदा पहुँचा है। वे जहाँ जाते हैं, वहाँ अगर हिन्दू-मुस्लिमके बीच द्वेषकी आग फैलायेंगे, तो अुससे देशका भला नहीं होगा।

लेकिन अेक बात वे अच्छी तरह कर सकते हैं, जिससे अुनको भी मदद मिलेगी और देशका भी फ़ायदा होगा।

पंजाबके लोग, और खासकर पश्चिमी पंजाबके लोग, अक्सर अुर्दू ही जानते हैं। पंजाब छोड़कर जहाँ-जहाँ वे जाकर बसते हैं—फिर वह काठियावाड़ गुजरात हो, बम्बअी महाराष्ट्र हो, मध्यप्रान्त और बरार हो, या यू० पी० और बिहार हो—अुन सब प्रान्तोंमें अक्सर नागरी लिपिका ही अेक या दूसरे रूपमें ज्यादा चलन है। पंजाबियोंको अब नागरी लिपि सीखे बिना चारा ही नहीं। राष्ट्रीयताके बढ़नेके कारण हो, या साम्प्रदायिक ज़हर फैलनेसे हो, देशके अलग-अलग प्रान्तोंके लोगोंका अेक दूसरेके साथ सम्पर्क बढ़ रहा है। और अंग्रेजी भाषाके हट जानेसे हर प्रान्तके लोगोंको हिन्दुस्तानीका सीखना ज़रूरी हो ही गया है। अैसी हालतमें पंजाबके पढ़े-लिखे लोग जहाँ-जहाँ भी जायँगे, स्थानिक लोगोंको अगर वे अुत्साहके साथ अुर्दू लिपि सिखायेंगे, तो स्थानिक लोगोंसे सम्पर्क बढ़ानेका मौका अुन्हें मिलेगा। चन्द लोगोंके लिअे छोटीसी आमदनीका साधन भी वह बनेगा और कम-से-कम खर्चमें हिन्दुस्तानीका प्रचार सब जगह ज़ोरोंसे होगा।

हिन्दुस्तानीकी जानकारीके लिअे नागरी और अुर्दू, दोनों लिपियाँ जानना जितना जरूरी है, अुतना ही हिन्दुस्तानीके शुद्ध और स्वाभाविक अुच्चारणका भी महत्व है। तामिलनाड़, केरल, बंगाल और आसाम जैसे सुदूर प्रान्तोंके लोगोंको हिन्दुस्तानीके अुच्चारण पकड़नेमें बड़ी कठिनाअी होती है। शुद्ध और स्वाभाविक अुच्चारण सुननेसे ही कोअी भी ज़बान आसानीसे सीखी जाती है। अिसमें भी पंजाबी निर्वासित लोग हिन्दुस्तानकी और हिन्दुस्तानीकी बड़ी सेवा कर सकते हैं।

काका कालेलकर

मुनासिब सतरें

जॉर्ज मेथसनकी कवितामेंसे अेक दोस्तने नीचेकी मुनासिब सतरें मेरे पास भेजी हैं—

"मेरे हाथ-पाँव जंजीरोंसे जकड़े हुअे हैं, अिसीलिअे मैं अुड़ सकता हूँ।

मेरे दुःखोंके कारण ही मैं आत्माके आकाशमें आजादीसे विहार कर सकता हूँ।

मैं पीछे हटता हूँ, अिसीलिअे तो आगे-आगे दौड़ सकता हूँ।

अपने आँसुओंके बलपर ही मैं अनन्तकी यात्रा कर सकता हूँ।

अपने क्रूसकी निसैनीसे चढ़कर ही मैं मनुष्यके हृदयमें पहुँचता हूँ।

अिसलिअे हे भगवान, मेरा क्रूस, मेरा दुःख, मेरी तकलीफें मुझे बढ़ाने दे!"

नअी दिल्ली, ३-१०-'४७

(अंग्रेजीसे) मो० क० गांधी

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१९ अक्तूबर १९४७

अेक कड़ुआ ख़त

अेक मुसलमान दोस्त लिखते हैं :—

"मैं राष्ट्रीय विचारोंवाला अेक मुसलमान हूँ। ज़िन्दगीभर — अगर मेरे २१ सालके जीवनको अिन शब्दोंमें प्रकट करने दिया जाय तो — मैंने हिन्दू और मुसलमानकी भाषामें कमी नहीं सोचा। मगर मेरे बड़े भाअी, वालिद और दूसरे रिश्तेदारोंने अिस बातकी बड़ी कोशिश की कि मैं हिन्दू और मुसलमानोंमें फ़र्क़ करूँ। अपनी जातिके ख़िलाफ़ ग़द्दारी करनेवाला होनेकी वजहसे जालंधरके अिस्लामिया कालेजमें मुझे भर्ती नहीं किया गया।

"मेरे वालिद और दूसरे रिश्तेदारोंने अप्रेलमें जालंधर छोड़ दिया, मगर मैं अुनके साथ नहीं गया, क्योंकि पूरबी पंजाब और अुससे भी ज़्यादा सारे हिन्दुस्तानको अपना मैं वैसा ही देश मानता था जैसा कि वह दूसरे फ़िरक़ेके मेरे दोस्तोंके लिअे था। मगर अगस्तकी वहशियाना वारदातोंने मुझे अितना निराश कर दिया है कि मैं बयान नहीं कर सकता। जनवरी, १९४६में जब आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोगोंपर मुकदमा चल रहा था, तब जिन लड़कोंने मेरे साथ जुलूस निकाला था, वे भी मेरी जान लेना चाहते थे। आखिरकार मैं अुनके लिअे अेक मुसलमान ही था, जिसकी जान लेनेसे वे अपनी जातिके लोगोंकी वाहवाही हासिल कर सकते थे। अिसलिअे मुझे अपनी जान बचानेके लिअे दिल्ली भागना पड़ा। मेरा ख़याल था कि जो लोग पाकिस्तानके बजाय अखंड हिन्दुस्तानमें विश्वास करते हैं, अुनके साथ यहाँ अैसा बरताव नहीं किया जायगा। मगर यहाँकी हालत और भी बुरी है। जिन दोस्तोंके साथ मैं यहाँ ठहरा हूँ, वे भी मुझे शककी निगाहसे देखते हैं।

"समता और आज़ादीके मेरे प्यारे फ़रिश्ते, अब मुझे बताओ कि मैं अपने ज़मीर (विवेक) के ख़िलाफ़ अपने मा-बापके पास, ज़िन्दगीभर अुनकी हँसीका साधन बननेके लिअे पच्छिमी पाकिस्तान चला जाअूँ, या हिन्दुस्तानमें बन्धकके बतौर रहूँ, जहाँके लोग, जानवर बने हुअे मेरे धर्म-भाअियोंके पापोंका बदला मुझे मारकर लेना चाहते हैं।"

अूपरके खतको मैंने थोड़ा संक्षेप कर दिया है। अुसमें कड़ुआहटको छुआ नहीं गया है। यह मानते हुअे कि अुस ख़तकी बातें सही हैं, अुसमें कड़ुआहटके लिअे काफ़ी गुंजाअिश है। बेहद विरोधी परिस्थितियोंमें ही किसी आदमीकी जाँच होती है। भले दिनोंके दोस्त बहुतसे होते हैं। मगर वे किसी कामके नहीं होते। 'जो ज़रूरतपर काम आये, वही सच्चा दोस्त है।' क्या अेक ही मज़हबको माननेवाले लोग आपसमें ठीक अुसी तरह नहीं लड़े हैं, जिस तरह आज हिन्दू और मुसलमान लड़ रहे हैं? जब आम जनताको अितने बरसोंसे लगातार नफ़रतका पाठ पढ़ाया जाता रहा हो, तब अुससे अिसके सिवा और क्या अुम्मीद की जा सकती है कि वह आपसमें कट मरे। अगर ख़त लिखनेवाले भाअी अपनी राष्ट्रीयताको ठीक समझते हैं, तो अुन्हें अिस टेढ़े वक़्तका सामना करना चाहिये। हमें अुन लोगोंकी नकल कभी नहीं करनी चाहिये जो कसौटीके वक़्त अपनी श्रद्धा छोड़ देते हैं। अिसलिअे अिन ख़त लिखनेवाले भाअीको यह सलाह देते हुअे मुझे ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं होती कि वे अपने पुराने दोस्तोंके द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिये जानेका ख़तरा अुठाकर भी अपने घर जालंधर लौट जायँ। अैसे शहीदोंसे ही हिन्दू-मुस्लिम अेकता कायम होगी। अगर वे भाअी अपने शब्दोंको सच साबित करते हैं, तो मैं पहलेसे कह रखता हूँ कि अुनके मा-बाप खुले दिलसे अुनका स्वागत करेंगे। हम अिन्सानोंकी किस्मतमें यही बदा है कि कसूरवारोंके पापोंका फल बेक़सूरोंको भोगना पड़े। यही ठीक भी है। बेकसूरोंके मुसीबतें सहनेकी वजहसे ही दुनिया अूपर अुठती और बेहतर बनती है। अिस खुले सत्यको बारबार दोहरानेके लिअे मेरा आज़ादी और समताका फ़रिश्ता होना ज़रूरी नहीं है।

नअी दिल्ली, १३-१०-'४७
(अंग्रेजीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ६-१०-'४७

अनाजकी समस्या

अनाजकी मौजूदा गंभीर परिस्थितिमें, डॉ० राजेन्द्रप्रसादको अपनी सलाहका लाभ देनेके लिअे अुनके आमंत्रणपर खुराकके विशेषज्ञ अिकट्ठा हुअे हैं। अिस अहम मामलेमें कोअी भूल होनेसे लाखों अिन्सान भुखमरीसे मर सकते हैं। कुदरती या अिन्सानके पैदा किये हुअे अकालमें हिन्दुस्तानके करोड़ों नहीं, तो लाखों आदमी भूखसे मरे हैं। अिसलिअे यह हालत हिन्दुस्तानके लिअे नयी नहीं है। मेरी रायमें अेक व्यवस्थित समाजमें अनाज और पानीकी कमीके सवालको कामयाबीसे हल करनेके लिअे पहलेसे ही सोचे हुअे अुपाय हमेशा तैयार रहने चाहियें। अेक व्यवस्थित समाज कैसा हो, और अुसे अिस सवालको कैसे सुलझाना चाहिये, अिन बातोंपर विचार करनेका यह वक़्त नहीं है। अिस वक़्त तो हमें सिर्फ़ यही विचार करना है कि अनाजकी मौजूदा भयंकर तंगीको हम किस तरह कामयाबीके साथ दूर कर सकते हैं।

स्वावलम्बन

मेरा खयाल है कि हम लोग यह काम कर सकते हैं। पहला सबक़, जो हमें सीखना है, वह है स्वावलम्बन और अपने आपपर भरोसा रखनेका। अगर हम यह सबक़ पूरी तरह सीख लें, तो विदेशोंपर मुनहसिर रहने और अिस तरह अपना दिवालियापन जाहिर करनेसे हम बच सकते हैं। यह बात घमण्डसे नहीं, बल्कि सचाअियोंको ध्यानमें रखकर कही गअी है। हमारा देश छोटासा नहीं है, जो अपने अनाजके लिअे बाहरी मददपर निर्भर रहे। यह तो अेक छोटा-मोटा महाद्वीप है, जिसकी आबादी चालीस करोड़के लगभग है। हमारे देशमें बड़ी बड़ी नदियाँ, कअी क़िस्मकी अुपजाअू ज़मीन और कभी न चुकनेवाला पशु-धन है। हमारे पशु अगर हमारी ज़रूरतसे बहुत कम दूध देते हैं, तो अिसमें पूरी तरहसे हमारा ही दोष है। हमारे पशु अिस काबिल हैं कि वे कभी भी हमें अपनी ज़रूरत पूरता दूध दे सकते हैं। पिछली कुछ सदियोंमें अगर हमारे देशकी तरफ़ दुर्लक्ष्य न किया गया होता, तो आज अुसका अनाज सिर्फ़ अुसीको काफ़ी नहीं होता, बल्कि पिछले महायुद्धकी वजहसे अनाजकी तंगी भुगतती हुअी दुनियाको भी अुसकी ज़रूरतका बहुत कुछ अनाज हिन्दुस्तानसे मिल जाता। आज दुनियाके जिन देशोंमें अनाजकी तंगी है, अुनमें हिन्दुस्तान भी शामिल है। आज तो यह मुसीबत घटनेके बजाय बढ़ती हुअी जान पड़ती है। मेरा यह सुझाव नहीं है कि जो दूसरे देश राजी-खुशीसे हमें अपना अनाज भेजना चाहते हैं, अुनका अहसान मानते हुअे माल ले लेनेके बजाय हम अुसे लौटा दें। मैं सिर्फ़ अितना ही कहना चाहता हूँ कि हम भीख न माँगते फिरें। अुससे हम नीचे गिरते हैं। अिसमें, देशके भीतर अेक जगहसे दूसरी जगह अनाज भेजनेकी कठिनाअियाँ और शामिल कर दीजिये। हमारे यहाँ अनाज और दूसरी खाने-पीनेकी चीज़ोंको अेक जगहसे दूसरी जगह शीघ्रतासे भेजनेकी सहूलियतें नहीं हैं। अिसके साथ ही यह नामुमकिन नहीं है कि अनाजकी फेर-बदलीके दरम्यान अुसमें अितनी मिलावट कर दी जाय कि वह खाने लायक ही न रहे। हम अिस बातसे आँखें नहीं मूँद सकते कि हमें अिन्सानके भले-बुरे सब क़िस्मके स्वभावसे निपटना है। दुनियाके किसी हिस्सेमें अैसा अिन्सान नहीं मिलेगा, जिसमें कुछ-न-कुछ कमज़ोरी न हो।

www.vinoba.in

विदेशी मददका मतलब

दूसरे, हम यह भी देखें कि हमें दूसरे देशोंसे कितनी मदद मिल सकती है। मुझे मालूम हुआ है कि हमारी मौजूदा ज़रूरतोंके तीन फ़ी सदीसे ज़्यादा मदद हम नहीं पा सकते। अगर यह बात सही है, और मैंने कअी विशेषज्ञोंसे अिसकी जाँच कराअी है और अुन्होंने अिसे सही माना है, तो मैं पूरी तरह मानता हूँ कि बाहरी मददपर भरोसा करना बेकार है। यह ज़रूरी है कि हमारे देशमें खेतीके लायक जो ज़मीन है, अुसके अेक अेक अिंच हिस्सेमें हम ज़्यादा पैसे दिलानेवाली चीज़ोंके बजाय रोज़मर्रा काममें आनेवाला अनाज पैदा करें। अगर हम बाहरी मददपर ज़रा भी निर्भर रहे, तो हो सकता है कि अपने देशके भीतर ही अपनी ज़रूरतका अनाज पैदा करनेकी जो ज़बरदस्त कोशिश हमें करनी चाहिये, अुससे हम बहक जायँ। जो परती ज़मीन खेतीके काममें लाअी जा सकती है, अुसे हम ज़रूर अिस काममें लें।

केन्द्रीकरण या विकेन्द्रीकरण?

मुझे भय है कि खाने-पीनेकी चीज़ोंको अेक जगह जमा करके, वहाँसे सारे देशमें अुन्हें पहुँचानेका तरीक़ा नुक़सानदेह है। विकेन्द्रीकरणके ज़रिये हम आसानीसे काले बाज़ारका खात्मा कर सकते हैं और चीज़ोंको यहाँसे वहाँ लाने-लेजानेमें लगनेवाले वक़्त और पैसेकी बचत कर सकते हैं। हिन्दुस्तानके अनाज पैदा करनेवाले देहाती लोग अपनी फसलको चूहों वग़ैरासे बचानेकी तरक़ीबें जानते हैं। अनाजको अेक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन लाने-लेजानेमें चूहे वग़ैराको अुसे खानेका काफ़ी मौका मिलता है। अिससे देशका करोड़ों रुपयोंका नुक़सान होता है और जब हम अेक अेक छटाक अनाजके लिअे तरसते हैं, तब देशका हजारों मन अनाज अिस तरह बरबाद हो जाता है। अगर हरअेक हिन्दुस्तानी, जहाँ मुमकिन हो, वहाँ अनाज पैदा करनेकी ज़रूरतको महसूस करे, तो शायद हम भूल जायँ कि देशमें कभी अनाजकी तंगी थी। ज़्यादा अनाज पैदा करनेका विषय अैसा है, जिसमें सबके लिअे आकर्षण है। अिस विषयपर मैं पूरे विस्तारके साथ तो नहीं बोल सका, मगर मुझे अुम्मीद है कि मेरे अितना कहनेसे आप लोगोंके मनमें अिसके बारेमें रुचि पैदा हुअी होगी और समझदार लोगोंका ध्यान अिस बातकी तरफ़ मुड़ा होगा कि हरअेक शख़्स अिस तारीफ़के लायक काममें मदद कर सकता है।

अनाजकी कमीका किस तरह सामना किया जाय?

अब मैं आपको यह बता दूँ कि बाहरसे हमको मिलनेवाले तीन फ़ी सदी अनाजको लेनेसे अिन्कार करनेके बाद हम किस तरह अिस कमीको पूरा कर सकते हैं। हिन्दू लोग महीनेमें दो बार अेकादशीका व्रत रखते हैं। अिस दिन वे आधा या पूरा अुपवास करते हैं। मुसलमान और दूसरे फिरक़ोंके लोगोंको भी, खास करके जब करोड़ों भूखों मरते लोगोंके लिअे अेक-आध दिनका अुपवास करना पड़े, तो अिसकी अुन्हें मनाही नहीं है। अगर सारा देश अिस तरहके अुपवासकी अहमियतको महसूस करे, तो हमारे खुद होकर विदेशी अनाज लेनेसे अिन्कार करनेके कारण जो कमी होगी, अुससे भी ज़्यादा क़मीको वह पूरी कर सकता है।

मेरी अपनी रायमें तो अगर अनाजके रेशनिंगका कोअी अुपयोग है भी, तो वह बहुत कम है। अगर अनाज पैदा करनेवालोंको अुनकी मर्ज़ीपर छोड़ दिया जाय, तो वे अपना अनाज बाज़ारमें लायेंगे और हरअेकको अच्छा और खाने लायक अनाज मिलेगा, जो आज आसानीसे नहीं मिलता।

प्रेसिडेण्ट ट्रुमेनकी सलाह

अनाजकी तंगीके बारेमें अपनी बात खत्म करनेसे पहले मैं आप लोगोंका ध्यान प्रेसिडेण्ट ट्रुमेनकी अमेरिकन जनताको दी गअी अुस सलाहकी तरफ़ दिलाअूँगा, जिसमें अुन्होंने कहा है कि अमेरिकन लोगोंको कम रोटी खाकर यूरोपके भूखों मरते लोगोंके लिअे अनाज बचाना चाहिये। अुन्होंने आगे कहा है कि अगर अमेरिकाके लोग खुद होकर अिस तरहका अुपवास करेंगे, तो अुनकी तन्दुरुस्तीमें कोअी कमी नहीं आयेगी। प्रेसिडेण्ट ट्रुमेनको अुनके अिस परोपकारी रुखपर मैं बधाअी देता हूँ। मैं अिस सुझावको माननेके लिअे तैयार नहीं हूँ कि अिस परोपकारके पीछे अमेरिकाके लिअे माली फ़ायदा अुठानेका गन्दा अिरादा छिपा हुआ है। किसी अिन्सानका न्याय अुसके कामों परसे होना चाहिये, अुनके पीछे रहनेवाले अिरादेसे नहीं। अेक भगवानके सिवा और कोअी नहीं जानता कि अिन्सानके दिलमें क्या है। अगर अमेरिका, भूखे यूरोपको अनाज देनेके लिअे अुपवास करेगा या कम खायेगा, तो क्या यह काम हम अपने खुदके लिअे नहीं कर सकेंगे? अगर बहुतसे लोगोंका भूखसे मरना निश्चित है, तो हमें स्वावलम्बनके तरीकेसे अुनको बचानेकी पूरी पूरी कोशिश करनेका यश तो कमसे कम ले ही लेना चाहिये। अिससे अेक राष्ट्र अूँचा अुठता है।

हम अुम्मीद करें कि डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा बुलाअी गअी कमेटी तब तक समाप्त नहीं होगी, जब तक वह देशकी मौजूदा अनाजकी भयंकर तंगीको दूर करनेका कोअी व्यावहारिक तरीका नहीं ढूँढ़ निकालेगी।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ७-१०-'४७

ज़्यादा कम्बलोंके लिअे अपील

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा कि परसोंके बादसे कुछ कम्बल मेरे पास और आये हैं। अिन दान देनेवालोंको मैं धन्यवाद देता हूँ। मगर मुझे यह कहते हुअे दुःख होता है कि अगर अिसी तरह धीरे धीरे और अितनी कम तादादमें यह चीज़ मिलती रही, तो लाखों बेआसरा निराश्रितोंको हम कम्बल नहीं दे सकेंगे। जनताको अिन्हें अिकट्ठे करनेका अैसा बंदोबस्त करना चाहिये कि थोड़े वक्तमें बहुत बड़ी तादादमें कम्बल अिकट्ठे किये जा सकें। अिन्हें निराश्रितोंमें ठीक तरहसे बाँटनेके लिअे या तो आप मेरे पास भेज सकते हैं, या अपनी मर्ज़ीके किसी शख़्स या संस्थापर भरोसा करके अुन्हें सौंप सकते हैं।

कांग्रेसके सिद्धान्तोंके प्रति सच्चे रहिये

अिसके बाद गांधीजीने कहा कि मुझे यह कहते दुःख होता है कि देहरादून या अुसके आसपास अेक मुसलमान भाअीका खून हो गया। अुसका अेकमात्र क़सूर यह था कि वह मुसलमान था। क्या मैं हिन्दुस्तानी संघके करोड़ों मुसलमानोंको हिन्दुस्तान छोड़ देनेके लिअे कह सकता हूँ? आखिर वे कहाँ जायें? रेल-गाड़ियोंमें भी वे सुरक्षित नहीं हैं। यह सच है कि पाकिस्तानमें हिन्दुओंकी भी यही दुर्गति हो रही है। मगर दो ग़लत कामोंसे अेक सही काम नहीं बन सकता। हिन्दुस्तानी संघके मुसलमानोंसे बदला लेकर आप पाकिस्तानके हिन्दुओं और सिक्खोंको कोअी मदद नहीं पहुँचा सकते। मैं आपसे अपील करता हूँ कि आप अपने धर्म और कांग्रेसकी नीतिके प्रति सच्चे बनें। क्या पिछले ६० बरसोंमें कांग्रेसने अैसा कोअी काम किया है, जिससे देशके हितको नुकसान पहुँचा हो? अगर अब कांग्रेसमें आपका विश्वास न रहा हो, तो आपको अिस बातकी आज़ादी है कि आप कांग्रेसी मंत्रियोंको हटाकर दूसरोंको अुनकी जगहपर बैठा दें। मगर आप कानूनको अपने हाथमें लेकर अैसा कोअी काम न करें, जिसके लिअे आपको बादमें पछताना पड़े।

अनाजका कंट्रोल

कल अनाजके कंट्रोलके बारेमें गांधीजीने अपने जो विचार ज़ाहिर किये थे, अुनका ज़िक्र करते हुअे अुन्होंने कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि अगर मेरे सुझावपर अमल किया जायगा, तो २४ घंटेके अन्दर अनाजकी तंगी काफ़ी हद तक दूर हो जायगी। विशेषज्ञ मेरे अिस सुझावसे सहमत हैं या नहीं, यह अलग बात है।

वज़ीरोंको चेतावनी

मेरे पास आकर कअी लोगोंने यह कहा कि जनताके मंत्री पुराने अंग्रेज अमलदारोंकी तरह ही मनमाने ढंगसे काम करते हैं। अिस

www.vinoba.in

पर प्रकाश डालनेवाले कुछ कागज़ात भी वे लोग मेरे पास छोड़ गये हैं। अिस सिलसिलेमें मैंने मंत्रियोंसे बातचीत नहीं की। मगर अिस मामलेमें मेरी राय साफ़ है कि जिन बातोंके लिअे हम अंग्रेज सरकारकी आलोचना करते रहे हैं, अुनमेंसे कोअी भी बात जिम्मेदार मंत्रियोंकी हुकूमतमें नहीं होनी चाहिये। अंग्रेजी हुकूमतके दिनोंमें वाअिसराय, कानून बनाने और अुनपर अमल करानेके लिअे ऑर्डिनेन्स निकाल सकते थे। तब जुडिशिअल और अेक्ज़ीक्युटिव्ह (न्याय और शासन) के काम अेक ही शख्सके पास रखनेका काफ़ी विरोध किया गया था। तबसे अब तक अैसी कोअी बात नहीं हुअी, जिससे अिस विषयमें राय बदलनेकी ज़रूरत हो। देशमें ऑर्डिनेन्सका शासन बिलकुल नहीं होना चाहिये। कानून बनानेका अधिकार सिर्फ़ आपकी धारा-सभाओंको रहे। वज़ीरोंको, जब जनता चाहे, तब अुनके पदोंसे हटाया जा सकता है। अुनके कामोंकी जाँच करनेका अधिकार आपकी अदालतोंको रहे। अुन्हें अिन्साफ़को सस्ता, सरल और बेदाग़ बनानेकी भरसक कोशिश करनी चाहिये। अिस मक़सदको पूरा करनेके लिअे 'पंचायत-राज' का सुझाव रखा गया है। हाअी कोर्टके लिअे यह मुमकिन नहीं कि वह लाखों लोगोंके झगड़े निपटा सके। सिर्फ़ ग़ैरमामूली हालतोंमें ही आकस्मिक क़ानून बनानेकी ज़रूरत पड़ती है। क़ानून बनानेमें कुछ ज्यादा देर भले लगे, मगर अेक्ज़ीक्युटिव्हको लेजिस्लेटिव्ह असेम्बलीपर हावी न होने दिया जाय। अिस वक्त कोअी अुदाहरण तो मेरे दिमाग़में नहीं है, मगर अलग-अलग सूबोंसे मेरे पास जो खत आये हैं, अुनके ही आधारपर मैंने ये बातें कही हैं। अिसलिअे जब मैं जनतासे अपील करता हूँ कि वह अपने हाथमें क़ानून न ले, तभी जनताके मंत्रियोंसे भी अपील करता हूँ कि जिन पुराने तरीकोंकी अुन्होंने निन्दा की है, अुन्हींको खुद अपनानेके खिलाफ़ वे सावधानी रखें।

रामराजका रहस्य

जनतासे मैं अेकबार फिर अपील करूँगा कि वह अपनी सरकारके प्रति सच्ची व वफ़ादार बने और या तो अुसकी ताक़त बढ़ाये या अुसे अपनी जगहसे अलग करदे, जिसका कि अुसे पूरा पूरा अधिकार है। जवाहरलालजी सच्चे जवाहर हैं। वे कभी हिन्दूराज कायम करनेकी बातका समर्थन नहीं कर सकते। और न सरदार ही, जिन्होंने मुसलमानोंकी हिफ़ाज़त की है, अैसा कर सकते हैं। अगरचे मैं अपने आपको अेक सनातनी हिन्दू कहता हूँ, फिर भी मुझे अिस बातका अभिमान है कि दक्खिनी अफ्रीकाके स्वर्गीय अिमाम साहब मेरे साथ हिन्दुस्तान आये थे और साबरमती आश्रममें अुनकी मृत्यु हुअी थी। अुनकी लड़की और दामाद अभी भी साबरमतीमें हैं। क्या मैं या सरदार अुन्हें निकाल दें? मेरा हिन्दू धर्म मुझे सिखाता है कि मैं सब धर्मोंकी अिज़्ज़त करूँ। यही रामराजका रहस्य है। अगर लोगोंको जवाहरलालजी, सरदार पटेल व अुनके साथियोंपर श्रद्धा और विश्वास न रहे, तो वे अुन्हें बदल सकते हैं; लेकिन लोग अुनसे यह अुम्मीद नहीं कर सकते, और अुन्हें करनी भी नहीं चाहिये कि वे अपनी आत्माके खिलाफ़ हिन्दुस्तानको सिर्फ़ हिन्दुओंका मुल्क मान लें। अिससे तो बरबादी ही होगी।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ८-१०-'४७

पैसोंके बजाय कम्बल दीजिये

गांधीजीने कहा कि कुछ कम्बल मेरे पास और आये हैं। दोपहरके बाद अेक दोस्त मेरे पास आये और अुन्होंने मुझे पैसे या कम्बल भेजनेकी अिच्छा ज़ाहिर की। मैंने अुनसे कम्बल भेजनेके लिअे कहा। जब मैं सभामें आ रहा था, तब दूसरे अेक भाअीने कम्बल खरीदनेके लिअे मुझे पाँच सौ रुपये दिये, जिन्हें मैंने ले लिया। मगर मैं रुपयोंके बजाय कम्बल लेना ज्यादा पसन्द करूँगा।

बहादुरोंकी अहिंसा

अेक भले आदमी मुझसे मिलने आये थे। वे देहरादूनसे आ रहे थे। रेलगाड़ीके जिस डिब्बेमें वे सफर कर रहे थे, वह हिन्दुओं और सिक्खोंसे भरा था। अुस डिब्बेमें चढ़नेवाले अेक नये आदमी पर लोगोंको शक हुआ। पूछनेपर अुस आदमीने अपनी जात चमार बतलाअी। मगर अुसकी कलाअीपर कुछ गुदा हुआ था, जो बताता था कि वह मुसलमान है। अितना काफ़ी था। अुस आदमीको छुरा मारकर जमनामें फेंक दिया गया। अुन भले आदमीने कहा कि वे अुस दृश्यको देख न सके और अुन्होंने अपना मुँह फेर लिया। मैंने अुन्हें डाँटा कि आपने अपनी जानका खतरा अुठाकर भी अुस मुसलमान भाअीको बचानेकी कोशिश क्यों नहीं की? अगर आप अैसा करते, तो मुमकिन था कि अुस मुसलमान भाअीकी जान बच जाती, अगरचे आपकी जान चली जाती। यह बहादुरकी अहिंसा होती। यह भी सम्भव था कि आपकी बहादुरीका असर दूसरे मुसाफिरोंपर पड़ता और विरोध करनेमें वे भी आपका साथ देते। अुन भले दोस्तने मंजूर किया कि यह बात अुनके दिमागमें अुस वक़्त नहीं आअी, अगरचे अुसे आना चाहिये था।

मुझे अिस विचारसे ग्लानि हुअी कि सभी मुसाफिर दिलसे अिस शैतानी-भरे काममें शामिल थे, अगरचे तिसपर भी मेरी सलाह यही होती कि अुन भाअीको अपनी जानका खतरा अुठाकर भी अुसका विरोध करना चाहिये था। मैंने महसूस किया है कि अंग्रेज सरकारके खिलाफ़ हमारी लड़ाअी बहादुरोंकी अहिंसापर आधारित नहीं थी। अुसका नतीजा मैं और सारा देश भुगत रहा है। अगर हो सके, तो मैं अपने जीवनके बचे हुअे दिन, लोगोंमें बहादुरोंकी अहिंसा पैदा करनेमें बिताना चाहता हूँ। यह अेक मुश्किल काम है। मैं मंजूर करता हूँ कि पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ है और हो रहा है, वह बहुत बुरा है। मगर हिन्दुस्तानीसंघमें जो कुछ हो रहा है, वह भी अुतना ही बुरा है। अिस बातका पता लगाते बैठना फ़िज़ूल है कि शुरूआत किसने की या किसकी गलती ज्यादा थी। अगर दोनों अब दोस्त बनना चाहते हैं, तो अुन्हें बीती हुअी बातें भूलनी होंगी। अगर वे वचन और कर्मसे बदला लेनेकी बात छोड़ दें, तो कलके दुश्मन आज दोस्त बन सकते हैं।

अखबारोंका फ़र्ज़

अखबारोंका जनतापर ज़बरदस्त असर होता है। सम्पादकोंका फ़र्ज़ है कि वे अपने अखबारोंमें ग़लत खबरें न दें या अैसी खबरें न छापें, जिनसे जनतामें अुत्तेजना फैले। अेक अखबारमें मैंने पढ़ा कि रेवाड़ीमें मेवोंने हिन्दुओंपर हमला कर दिया। अिस खबरने मुझे बेचैन कर दिया। मगर दूसरे दिन अखबारोंमें यह पढ़कर मुझे खुशी हुअी कि वह खबर ग़लत थी। अैसे कअी अुदाहरण दिये जा सकते हैं। सम्पादकों और अुप-सम्पादकोंको खबरें छापने और अुन्हें खास स्वरूप देनेमें बहुत ज्यादा सावधानी लेनेकी ज़रूरत है। आज़ादीकी हालतमें सरकारोंके लिअे यह क़रीब क़रीब नामुमकिन है कि वे अखबारोंपर क़ाबू रखें। जनताका फ़र्ज़ है कि वह अखबारोंपर कड़ी नज़र रखे और अुन्हें ठीक रास्तेपर चलाये। पढ़ी-लिखी जनताको चाहिये कि वह भड़कानेवाले या गन्दे अखबारोंकी मदद करनेसे अिन्कार कर दे।

फौज और पुलिसका फ़र्ज़

जिस तरह प्रेस किसी राजका मजबूत अंग होता है, अुसी तरह फौज और पुलिस भी हैं। वे किसीकी तरफ़दारी नहीं कर सकतीं। साम्प्रदायिक आधारपर फौज और पुलिसका बँटवारा बहुत बुरी चीज़ है। लेकिन अगर फौज और पुलिस साम्प्रदायिक विचारकी बन जाती हैं, तो अुसका नतीजा बरबादी ही होगा। हिन्दुस्तानी संघकी फौज और पुलिसका यह फर्ज़ है कि वे जान देकर भी अल्पमतवालोंकी हिफाज़त करें। वे अपने अिस पहले फर्ज़को अेक पलके लिअे भी भुला नहीं सकतीं। यही बात मैं पाकिस्तानकी फौज और पुलिसके बारेमें भी कहूँगा, जिन्हें वहाँके अल्पमतवालोंकी रक्षा करनी ही चाहिये। पाकिस्तानकी फौज और पुलिस मेरी बात मानें या न मानें, लेकिन अगर मैं यूनियनकी फौज और पुलिससे सही काम करा सकूँ, तो मुझे पक्का विश्वास है कि पाकिस्तानको भी अैसा करना पड़ेगा।

www.vinoba.in

अिस बातने सारी दुनियापर प्रभाव डाला है कि हिन्दुस्तानने बिना खून बहाये आज़ादी पाअी है। फौज और पुलिसको अपने सही बरतावसे अुस आज़ादीके लायक बनना होगा। अिसके अलावा, आज़ाद हिन्दुस्तानमें दोनोंको अीमानदारीसे अपना फर्ज़ अदा करना चाहिये। जब तक हर नागरिक सरकारकी तरफ़ अपना फर्ज़ अदा नहीं करता, तब तक कोअी आज़ाद सरकार शासन चला ही नहीं सकती। मैं यहाँ अुन्हें अहिंसक बननेकी बात नहीं कह रहा हूँ। मैं तो सिर्फ़ यही कहता हूँ कि वे अहिंसाको मानें या न मानें, लेकिन अपना बरताव ठीक रखें। अगर अुन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया, तो बादमें अुन्हें पछताना होगा।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ९–१०–'४७

जल्दी कम्बल दीजिये

मुझे आज दिनमें कमसे कम ३० कम्बल मिले हैं। मैं दानियोंसे अपील करता हूँ कि वे जल्दी जल्दी अपना दान दें। क्योंकि अक्तूबरके दूसरे तीसरे हफ्तेसे दिल्लीमें तेज सर्दी पड़ने लगती है। दान समयपर न दिया जाय, तो वह अपनी कीमत खो देता है।

शान्तिसे सुनना ही काफी नहीं

आप मेरी बात शान्तिसे सुनते हैं, अिसके लिअे मैं आपका अहसानमन्द हूँ। लेकिन अितने से ही काम नहीं चलेगा। अगर मेरी सलाह सुनने लायक़ है, तो अुसपर आपको अमल भी करना चाहिये।

पाकिस्तानके अल्पमतवाले

पाकिस्तानमें हिन्दू और सिक्ख भयंकर दशामें हैं। पाकिस्तान छोड़कर हिन्दुस्तानी संघमें आनेका काम बड़ा कठिन है। कअी लोग रास्तेमें ही मर जायँगे। पाकिस्तान छोड़कर यूनियनमें आ जानेके बाद भी निराश्रित-छावनियोंमें अुनकी दशा बहुत अच्छी नहीं हो जाती। कुरुक्षेत्रकी छावनीमें हजारों लोग आसमानके नीचे पड़े हैं। वहाँ डॉक्टरी मदद काफी नहीं है। न अुन्हें ताकत देनेवाला खाना ही मिलता है। अिसके लिअे सरकारको दोष देना ग़लत होगा। मैं लोगोंको क्या सलाह दूँ? आज दिनमें पश्चिमी पाकिस्तानके कुछ दोस्त मुझसे मिले थे। अुन्होंने मुझे अपने दुःख-दर्दकी कहानी सुनाअी और कहा कि पाकिस्तानमें रह जानेवाले लोगोंको जल्दी ही यूनियनमें ले आना चाहिये। मैं सरकार नहीं हूँ। लेकिन आजकी ग़ैर-मामूली हालतोंमें कोअी भी सरकार पूरी तरह चाहनेपर भी वह सब नहीं कर सकती, जो वह करना चाहती है। पूरबी बंगालसे खबर आअी है कि वहाँसे भी लोगोंने भागना शुरू कर दिया है। मैं अिसका कारण नहीं जानता। मेरे साथ काम करनेवाले — जिनमें सतीशबाबू और खादी प्रतिष्ठानके दूसरे लोग भी हैं — प्यारेलालजी, कनु गांधी, अमतुल सलामबेन और सरदार जीवनसिंहजी आज भी वहाँ काम कर रहे हैं। मैंने खुद नोआखालीका दौरा करके लोगोंको यह समझानेकी कोशिश की थी कि वे सारा डर छोड़ दें। अिस खबरने मुझे लोगों और सरकारके फर्ज़पर सोचनेका मौका दिया है। जो अेक राजको छोड़कर दूसरे राजमें आ रहे हैं, वे यह सोचते होंगे कि हिन्दुस्तानी संघमें अुनकी हालत बड़ी अच्छी हो जायगी। लेकिन अुनका यह ग़लत खयाल है। पूरे दिलसे चाहनेपर भी सरकार अितने निराश्रितोंके खाने-पीने और रहने वग़ैराका अिन्तजाम नहीं कर सकती। वह फिरसे निराश्रितोंके लिअे पहली हालत पैदा नहीं कर सकेगी। वह लोगोंको यही सलाह दे सकती है कि वे अपनी अपनी जगहोंपर जमें रहें और अपनी रक्षाके लिअे भगवानके सिवा किसीकी तरफ़ न देखें। अगर अुन्हें मरना भी पड़े, तो वे बहादुरीसे अपने घरोंमें ही मरें। स्वभावसे संघकी सरकारका यह फर्ज़ होगा कि वह दूसरी सरकारसे अपने अल्पमतवालोंकी सुरक्षाकी माँग करे। दोनों सरकारोंका यह फर्ज़ है कि वे मौजूदा हालतोंमें मिलजुलकर सही बरताव करें। अगर यह अुचित बात नहीं होती, तो अिसका लाजमी नतीजा होगा लड़ाअी। लड़ाअीकी हिमायत करनेवाला मैं आखिरी आदमी होअूँगा। लेकिन मैं यह जानता हूँ कि जिन सरकारोंके पास फौजें और हथियार हैं, वे लड़ाअीके सिवा दूसरा रास्ता अख्तियार कर ही नहीं सकतीं। अैसा कोअी रास्ता सर्वनाशका रास्ता होगा। आबादीकी फेरबदलीमें होनेवाली मौतसे किसीको कोअी फ़ायदा नहीं होता। फेरबदलीसे राहत-कामकी और लोगोंको फिरसे बसानेकी बड़ी बड़ी समस्यायें खड़ी होती हैं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १०–१०–'४७

और कम्बल मिले

गांधीजीने जाहिर किया कि मेरे पास और बहुतसे कम्बल आये हैं। कम्बल खरीदनेके लिअे कुछ रुपये और अेक सोनेकी अगूँठी भी दानमें मिली है। बड़ोदासे मुझे अेक तार मिला है, जिसमें बताया गया है कि वहाँ निराश्रितोंके लिअे ८०० कम्बल तैयार हैं। और भी ज्यादा तादादमें भेजे जा सकते हैं, बशर्ते रेलसे भेजनेकी अिजाजत मिल जाय। मुझे आशा है कि अिस रफ्तारसे निराश्रितोंको सर्दीकी बरबादीसे बचानेके लिअे काफ़ी कम्बल अिकट्ठे हो जायँगे।

खाने और कपड़ेकी तंगी

आज देशमें खाने और कपड़ेकी भारी तंगी है। आज़ादीके आनेसे यह तंगी पहलेसे ज्यादा भयंकर रूपमें दिखाअी देने लगी है। मैं अिसका कारण समझ नहीं सकता। यह आज़ादीकी निशानी नहीं है। हिन्दुस्तानकी आज़ादी अिसलिअे और भी ज्यादा कीमती हो जाती है कि जिन साधनोंसे हमने अुसे पाया है, अुनकी सारी दुनियाने तारीफ़ की है। हमारी आज़ादीकी लड़ाअीमें खून नहीं बहा। अैसी आज़ादीको हमारी समस्यायें पहलेके बनिस्बत ज्यादा तेजीसे हल करनेमें मदद करनी चाहिये।

खुराकके सम्बन्धमें मैं कहूँगा कि आजका कंट्रोल और रेशनिंगका तरीका ग़ैर-कुदरती और व्यापारके अुसूलोंके खिलाफ़ है। हमारे पास अुपजाअू जमीनकी कमी नहीं है, सिंचाअीके लिअे काफ़ी पानी है और काम करनेके लिअे काफ़ी आदमी हैं। अैसी हालतमें खुराककी तंगी क्यों होनी चाहिये? जनताको अपने आपपर निर्भर करनेका पाठ पढ़ाना चाहिये। अेक बार जब लोग यह समझ लेंगे कि अुन्हें अपने ही पाँवोंपर खड़े रहना है, तो सारे वातावरणमें अेक बिजली-सी दौड़ जायगी। यह मशहूर बात है कि असल बीमारीसे जितने लोग नहीं मरते, अुससे कहीं ज्यादा अुसके डरसे मर जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप अकालके संकटका सारा डर छोड़ दें। लेकिन शर्त यही है कि आप अपनी ज़रूरतें खुद पूरी करनेका कुदरती कदम अुठायें। मुझे पक्का विश्वास है कि खुराक परसे कंट्रोल अुठा लेनेसे देशमें अकाल नहीं पड़ेगा और लोग भुखमरीके शिकार नहीं होंगे।

अुसी तरह, हिन्दुस्तानमें कपड़ेकी तंगी होनेका भी कोअी कारण नहीं है। हिन्दुस्तान अपनी ज़रूरतसे ज्यादा कपास पैदा करता है। लोगोंको खुद कातना और बुनना चाहिये। अिसलिअे मैं तो चाहता हूँ कि कपड़ेका कंट्रोल भी अुठा दिया जाय। हो सकता है कि अिससे कपड़ेकी कीमत बढ़ जाय। मुझसे यह कहा गया है और मेरा विश्वास है कि अगर लोग कमसे कम छह महीने तक कपड़ा न खरीदें, तो स्वभावसे कपड़ेकी कीमत घट जायगी। और मैंने यह सुझाया है कि अिसी बीच ज़रूरत पड़नेपर लोगोंको अपनी खादी तैयार करनी चाहिये। अिस मौकेपर मैं अपने अिस विश्वास पर अमल करनेकी बात नहीं कहता कि खादीके अिस्तेमालमें दूसरे किसी कपड़ेका अिस्तेमाल शामिल नहीं है। अेक बार लोग अपनी खुराक और कपड़ा खुद पैदा करने लगे कि अुनका सारा दृष्टिकोण ही बदल जायगा। आज हमें सिर्फ़ सियासी आज़ादी मिली है। मेरी सलाहपर अमल करनेसे आप माली आज़ादी भी हासिल करेंगे और अुसे गाँवोंका अेक अेक आदमी महसूस करेगा। तब लोगोंके पास आपसमें झगड़नेका समय या अिच्छा नहीं रह जायगी। अिसका नतीजा यह होगा कि शराब, जुआ वग़ैरा जैसी दूसरी बुराअियाँ भी छूट जायँगी। तब हिन्दुस्तानके लोग आज़ादीके हर मानोंमें

www.vinoba.in

आजाद हो जायँगे। भगवान भी अुनकी मदद करेगा, क्योंकि वह अुन्हींकी मदद करता है, जो खुद अपनी मदद करते हैं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ११-१०-'४७

चरखा-जयन्ती

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने लोगोंको याद दिलाया कि आज भादौं वदि बारसका दिन है। अिस दिनको गुजरात, कच्छ और काठियावाड़में रेंटिया-बारस या चरखा-जयन्तीके नामसे लोग जानते हैं। आज जगह जगह सभायें की जाती हैं और लोगोंको चरखेके प्रोग्राम और अुससे जुड़े हुअे कामोंकी याद दिलाअी जाती है। आजका समय अुत्साह और धूमधामसे चरखा-जयन्ती मनानेका नहीं है। मैंने चरखेको अुसके फैले हुअे अर्थमें अहिंसाका प्रतीक कहा है। मालूम होता है कि वह प्रतीक आज खतम हो गया है, वर्ना आप भाअी-भाअीका खून और अिसी तरहके दूसरे हिंसाभरे काम होते न देखते। मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि क्या चरखा-जयन्तीका अुत्सव बिलकुल बन्द कर देना ठीक न होगा? लेकिन मेरे दिलमें यह आशा छिपी हुअी है कि हिन्दुस्तानमें कमसे कम कुछ आदमी तो अैसे होंगे, जो चरखेके सन्देशको वफ़ादारीसे मानते होंगे। अुन्हीं लोगोंके खातिर चरखा-जयन्तीका अुत्सव चालू रहना चाहिये।

हरिजनोंके लिअे बिल्ले

मैंने कल अेक बयानमें देखा था कि मण्डल साहब और पाकिस्तान केबिनेटके कुछ दूसरे मेम्बरोंने यह तय किया है कि हरिजनोंसे अैसे बिल्ले लगानेकी आशा रखी जायगी, जो अुनके अछूत होनेकी निशानी हों। अुन बिल्लोंमें चाँद और तारेकी छाप होगी। यह फैसला हरिजनोंका दूसरे हिन्दुओंसे फर्क़ दिखानेके अिरादेसे किया गया है। मेरी रायमें अिसका लाजमी नतीजा यह होगा कि जो हरिजन पाकिस्तानमें रहेंगे, अुन्हें आखिरमें मुसलमान बनना पड़ेगा। दिली विश्वास और आत्माकी प्रेरणासे लोग धर्म बदलें, तो अुसके खिलाफ़ मुझे कुछ नहीं कहना है। अपनी अिच्छासे हरिजन बन जानेके कारण मैं हरिजनोंके मनको जानता हूँ। आज अेक भी हरिजन अैसा नहीं है, जो अिस्लाममें शामिल किया जा सके। अिस्लामके बारेमें वे क्या जानते हैं? न वे यही समझते हैं कि वे हिन्दू क्यों हैं। हर धर्मको माननेवालोंपर यही बात लागू होती है। आज वे जो कुछ भी हैं, वह अिसीलिअे हैं कि वे किसी खास धर्ममें पैदा हुअे हैं। अगर वे अपना धर्म बदलेंगे, तो सिर्फ़ मजबूर होकर या किसी लालचके शिकार बनकर, जो अुन्हें धर्म बदलनेके लिअे दिखाया जायगा। आजके वातावरणमें लोग खुद होकर धर्म बदलें, तो भी अुसे सच्चा या कानूनी नहीं मानना चाहिये। धर्मको जीवनसे भी ज़्यादा प्यारा और ज़्यादा कीमती समझना चाहिये। जो अिस सचाअी पर अमल करते हैं वे अुस आदमीके बनिस्बत ज़्यादा अच्छे हिन्दू हैं जो हिन्दू धर्म-शास्त्रोंका जानकार तो है, लेकिन जिसका धर्म संकटके समय टिका नहीं रहता।

दशहरा और बकर अीद

अिसके बाद गांधीजीने दशहरा और बकर अीदके पास आ रहे त्योहारोंका जिक्र किया और हिन्दुओं व मुसलमानोंसे अपील की कि वे ज्यादासे ज्यादा सावधान रहें और अिस मौकेपर अेक दूसरेकी भावनाओंको ठेस न पहुँचायें। मैं चाहता हूँ कि अिन त्योहारोंके मौकेपर दोनों पार्टियाँ साम्प्रदायिक दंगोंको जन्म देनेवाले कारणोंसे बचें।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह

आखिरमें गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें कलसे शुरू किये जानेवाले सत्याग्रहका जिक्र करते हुअे कहा, वहाँ सत्याग्रह कुछ समय तक पहले चला था। बीचमें वह थोड़े दिनोंके लिअे बन्द कर दिया गया था। हिन्दुस्तानका मामला संयुक्त राष्ट्र संघके सामने है और दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुओं और मुसलमानोंने कलसे फिर सत्याग्रह शुरू करनेका फैसला किया है। मेरी अुन लोगोंको यह सलाह है कि वे हिन्दुस्तानी संघ और पाकिस्तानकी सरकारोंकी मदद माँगें। दोनों सरकारोंका यह फर्ज़ है कि वे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी भरसक मदद करें और अुन्हें बढ़ावा दें। सफल सत्याग्रहकी शर्त यही है कि हमारा मकसद शुद्ध और सही हो और अुसे हासिल करनेके साधन पूरी तरह अहिंसक हों। अगर दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी अिन शर्तोंका पालन करेंगे, तो अुन्हें ज़रूर सफलता मिलेगी।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १२-१०-'४७

निराश्रितोंके बारेमें दो बातें

आज दिनमें मुझे और ज्यादा कम्बल मिले हैं। लोगोंने रजाअियाँ देनेका वचन भी दिया है। कुछ मिलें भी निराश्रितोंके लिअे रज़ाअियाँ तैयार करवा रही हैं। कम्बलोंकी तरह रजाअियाँ ओसमें सूखी नहीं रह सकेंगी। वे गीली हो जायँगी। लेकिन अुन्हें ओससे बचानेका अेक आसान रास्ता यह हो सकता है कि रातमें अुन्हें पुराने अखबारोंसे ढँक लिया जाय। रजाअियोंमें अेक फायदा यह है कि वे अुधेड़ी जा सकती हैं। अुनका कपड़ा धोया जा सकता है और रूअीको हाथसे पींजकर दुबारा भरा जा सकता है।

जो अीश्वरकी मदद माँगते हैं, वे बदकिस्मतीको भी खुश-किस्मतीमें बदल सकते हैं। निराश्रितोंमें कुछ लोग अैसे हैं, जो दुःख-दर्द अुठानेके कारण कड़ुवाहटसे भरे हुअे हैं। अुनके दिलोंमें गुस्सेकी आग जल रही है। लेकिन गुस्सेसे कोअी फायदा नहीं होगा। मैं जानता हूँ कि वे खुशहाल लोग थे। आज वे अपना सब कुछ खो चुके हैं। जब तक वे अिज़्ज़त, शान और सुरक्षाकी गारण्टीके साथ अपने घरोंको नहीं लौटते, तब तक अुन्हें छावनीके जीवनमें ही अच्छे से अच्छा काम करना चाहिये। अिसलिअे सोच-समझकर घरोंको लौटनेकी बात तो बड़े लम्बे समयका प्रोग्राम है। लेकिन अिस बीच निराश्रित लोग क्या करें? मुझे यह बताया गया है कि पाकिस्तानसे आनेवाले लोगोंमें ७५ फ़ी सदी व्यापारी हैं। वे सब तो हिन्दुस्तानी संघमें व्यापार शुरू करनेकी आशा नहीं रख सकते। अैसा करनेसे वे संघकी सारी माली व्यवस्थाको बिगाड़ देंगे। अुन्हें हाथसे काम करना सीखना होगा। डॉक्टरों, नर्सों वग़ैरा जैसे किसी धन्धेको जाननेवाले लोगोंके लिअे संघमें काम मिलना कठिन नहीं होना चाहिये। जो यह महसूस करते हैं कि पाकिस्तानसे हमें निकाल दिया है, अुन्हें यह जानना चाहिये कि वे सारे हिन्दुस्तानके नागरिक हैं, न कि सिर्फ़ पंजाब, सरहदी सूबे या सिन्धके। शर्त यह है कि वे जहाँ कहीं जायँ, वहाँके रहनेवालोंमें दूधमें शकरकी तरह घुलमिल जायँ। अुन्हें सेहनती बनना और अपने व्यवहारमें अीमानदार रहना चाहिये। अुन्हें यह महसूस करना चाहिये कि वे हिन्दुस्तानकी सेवा करने और अुसके यशको बढ़ानेके लिअे पैदा हुअे हैं, न कि अुसके नामपर कालिख पोतने या अुसे दुनियाकी आँखोंमें गिरानेके लिअे। अुन्हें अपना समय जुआ खेलने, शराब पीने या आपसी लड़ाअी-झगड़ेमें बरबाद नहीं करना चाहिये। गलती करना अिन्सानका स्वभाव है। लेकिन अिन्सानोंको गलतियोंसे सबक सीखने और दुबारा गलती न करनेकी ताकत भी दी गअी है। अगर निराश्रित मेरी सलाह मानेंगे, तो वे जहाँ कहीं भी जायँगे, वहाँ फ़ायदेमन्द साबित होंगे और हर सूबेके लोग खुले दिलसे अुनका स्वागत करेंगे।

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
अेक विद्यार्थीकी अुलझन	... गांधीजी	३१३
आज़ाद हिन्दुस्तानमें नअी तालीम	... आर्यनायकम्	३१४
वाह छावनीमें कस्तूरबा ट्रस्टकी बहनोंका काम	... सुशीला नय्यर	३१४
"अेक पाअी भी नहीं"	... जे० सी० कुमारप्पा	३१५
पंजाबियोंके लिअे अच्छा मौका	... काका कालेलकर	३१५
अेक कड़ुआ खत	... गांधीजी	३१६
गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण	...	३१६
टिप्पणी —		
मुनासिब सतरें	... मो० क० गांधी	३१५